☛ रौशन पाठक

गमों का दौड़ है ।

गमों का दौड़ है, जीये जाता हूँ ।
गम थोड़ा कम हो जाये,
ये सोच जाम पर जाम
पीये जाता हूँ ।

हजारों खूबसूरत चेहरों ने
तोड़ा दिल मेरा,
फिर भी इश्क किये जाता हूँ ।
गमों का दौड़ है .....

टूटे हर बार, रेत से बने
ख्वाहिश के महल मेरे,
फिर भी ख्यालो के ढेर
किये जाता हूँ।
इस बार पूरी होगी हसरत,
खुद ही को झूठी तसल्ली
दिये जाता हूँ ।
गमों का दौड़ है.....

गम के भँवर मे डूबा हुआ हूँ,
पर खूशी की एक लहर तो
मेरे दर तक भी पहुँचा दे ।
सूखे समंदर से ये आरजू
किये जाता हूँ ।
गमों का दौड़ है.....

काटों मे ही गुलाब,
किचड़ मे ही कमल
सदा खिलते है ।
शायद दामन मे
चुभते काटें लेकर ही,
फूलों से मिल पाउँगा।
इसी तमन्ना में
तकदीर से लडाई
किये जाता हूँ ।
गमों का दौड़ है.....

तेज बह लेना ऐ हवा,
जब घर मेरा इंटो से बना होगा ।
अभी जरा रहम करो ऐ हवा,
तिनकों से बुनियाद घर की
दिये जाता हूँ ।
गमों का दौड़ है.....